

4314. Spr. 2469. 4378. Bhāg. P. 6, 16, 39. रुक्ते रुक्ते: Bhāg. P. 2, 10, 24. पादौ रुक्ते 23. भृगोः श्मश्रूणां रुक्ते 4, 6, 31. ब्रह्म जयमग्रावकः — विप्रदुमः Rāga-Tar. 4, 26. Kām. Nitis. 13, 13. ब्रह्मादल (धरण्या) Hariv. 3643. ब्रह्मणाङ्गुरेषु (कर्म्येषु) Ragh. 16, 18. ब्रह्मस्कन्धो महादुमः R. 2, 103, 6. ब्रह्मरागप्रवाल (मनसिजतरु) Mālav. 39. केसरैर्ध्वजैः Megh. 21. घट्ट-
ठमूलव Mālav. 8. ब्रह्मशु R. 7, 23, 1, 13. — 3) verwachsen, heilen: चर्मणा चर्म रुक्ते, मांसं मांसं रो AV. 4, 12, 4. ब्रह्मश्यास्य चिरेण रुक्-
ति Suçr. 1, 37, 6. Spr. 2647 (med.). Kathās. 28, 160. 179. ब्रह्मराग R. 6, 103, 15. Suçr. 1, 37, 6. 60, 18. 88, 15. fg. 18. Ragh. 13, 73. Kathās. 10, 197. 63, 15. 101, 348. Rāga-Tar. 4, 281. H. 463. Vgl. ब्रह्म. — 4) wachsen so v. a. sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen: रुक्ति का धिकप्रत्यूहा: Rāga-Tar. 1, 158. कश्चिन्म-
तिविपर्ययप्रकारो रुदि रुक्ति 3, 42, 4, 236. कामधियस्त्वयि रचिता न प-
रम रुक्ति Bhāg. P. 6, 16, 39. तत्तदा वाक्यं न रुक्ति so v. a. trägt keine Frucht, ist unnütz MBh. 12, 11944. घाति मे रुदये ब्रह्म 6, 581. Spr. 2335. Rāga-Tar. 3, 48. Bhāg. P. 4, 8, 48. 9, 9, 47. ०यौवन bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat 10, 33, 9. Pañkār. 3, 7, 37. Kathās. 27, 187. संश्रयोपब्रह्म hervorgegangen aus Ragh. 6, 41, 1, 31. ब्रह्म कृतमूलश्च शेषं स्यास्पति ते सुतः gewachsen so v. a. sich Anhang verschafft habend R. 2, 9, 27. ब्रह्मैकहृद bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat Vikr. 10. योगिनो ब्रह्मयोगाः Bhāg. P. 3, 21, 13. ऋषयो ब्रह्मन्धवः 4, 14, 34. 5, 12, 6. 8, 22, 6. 10, 47, 59. fg. 33, 40. ब्रह्म = ज्ञात Med. dh. 3. — 5) ब्रह्म gewachsen so v. a. verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig: = प्रसिद्ध Med. तव तन्वद्भि मिथ्यैव ब्रह्मज्ञेषु मार्दवम् Spr. 4112. तत्तात्काल त्रा-
पत इत्युदयः तत्रत्य शब्दे भुवनेषु ब्रह्म: Ragh. 2, 53. Sāh. D. 13, 3. Daçak. 82, 3. Verz. d. Oxf. H. 177, b, 17. Gaupar. zu Sāmkhjak. 61. Schol. zu Bhāṭṭ. 3, 18. सुब्रह्मे केरार्थे Varāh. Brh. S. 2, 3. अब्रह्म unbekannt, uner-
hört (und nicht ब्रह्म oder आब्रह्म) ist wohl anzunehmen Kathās. 61, 251. Rāga-Tar. 4, 124. 3, 173. — 6) ब्रह्म überliefert, allgemein bekannt von Wörtern, deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine specielle, von der Etymologie unabhängige (nach indischer Anschauung) Bedeutung habend H. 1. व्युत्पत्तिरुक्ताः शब्दा ब्रह्म आ-
खण्डलादयः 2. यत्रावयवशक्तिनैरेपेक्षेण (d. i. ०द्येण) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तत्रूथ यथा गोपदघटादिपदम् Comm. zu Bhāṣuāp. S. 83. Schol. zu P. 2, 2, 26. अमनुष्यशब्दे रत्नः पिशाचादिषु ब्रह्म: 4, 23, 3, 1, 129. 4, 3, 99. 5, 1, 48. 59, 3, 27. 6, 2, 8. Siddh. K. zu P. 6, 3, 34. Vop. 7, 14. नाम ब्रह्मपि च व्युत्पादि Çic. 10, 23. ०नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210, b, 4 v. u.; vgl. योगब्रह्म und योगिकब्रह्म unter योगिक. — MBh. 1, 5337 ist nicht रुक्ते, wie Johnson und nach ihm Benfey annehmen, sondern उक्ते gemeint. Vgl. 1. रुध्.

— caus. रौक्यति und später रौप्यति P. 7, 3, 43. Vop. 18, 13. 1) in die Höhe bringen, aufsteigen machen: ये सूर्यमरौक्यन्दि वि RV. 10, 62, 3. 63, 11. AV. 13, 1, 13. TBr. 1, 2, 1. चतुष्पञ्चाशतं रुक्तावोपयित्वा महा-
शिलाम् aufführen Rāga-Tar. 4, 199. — 2) legen auf, bringen in, stecken an, in: फलवत्तश्च ये वृत्ताः समूलविटपास्तथा । रोपयित्वा वृक्षेषु R. Gorr. 1, 9, 8. तामरोपयत् । गुरुनासां मुखे तस्याः Kathās. 61, 16. चापरो-
पितशर Spr. 2289. मुकुटे रोपितः काचशरणाभरणे माणिः gefasst in 2206. अर्कितरोपितमार्गण gerichtet auf Ragh. 9, 22. राजवेष्मनि ते सुधु रौक्-

तम् deine Versetzung in MBh. 4, 271. ते सुधु गृहे तु d. i. ते सुधु गृहे तु ed. Bomb. übergeben, übertragen: गुणवत्सुतरोपितश्चिपः — दिलीपवंशजाः Ragh. 8, 11. — 3) pflanzen, säen: तस्माद्वृक्षा रोपयेत् MBh. 13, 2995. 6072. R. 2, 80, 7 (87, 8 Gorr.). Spr. 2349. Varāh. Brh. S. 33, 8, fg. 20. Rāga-Tar. 2, 15, 130. शाखा एव रोपिता वृन्ततां याति in die Erde gesteckt Kull. zu M. 1, 46. आरामाश्च रोपयेत् MBh. 13, 3002. प्रयत्ति सर्ववीजानि रोप्य-
माणानि चैव रु 3, 13116. bildlich: उच्चवान् — बद्धमूलां तणाह्लादमीं प्रुचं दीर्घामरोपयत् Rāga-Tar. 3, 149. तदेव शतनोर्वशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्या रोपिता मया Hariv. 3007. — 4) wachsen —, verwachsen ma-
chen, heilen lassen, heilen (trans.): रौक्येदम् (sc. अस्थि च्छिन्नम्) AV. 4, 12, 1. ब्रह्मोपयत् Suçr. 2, 10, 11. 4. Kathās. 28, 163. 169. fg. 177. fg.

— desid. रुक्नति; Bhāg. P. 4, 8, 67 ist प्रेम्णारुक्नतं (desid. von आ-रुक्) zu schreiben.

— अति 1) hinaussteigen über: अति त्री सौम रोचना रौक्न धात्रसे दि-
वम् RV. 9, 17, 5. — 2) grösser wachsen: यद्वैनातिरौकति RV. 10, 90, 2 = Çvetāçv. Up. 3, 15 = Tattvas. 20 (v. l. अन्धेन). — 3) अतिब्रह्म all-
gemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit Rāga-Tar. 6, 272.

— व्यति erlangen, theilhaftig werden; mit acc.: तदा देहो देहमन्यं व्यतिरौकति कालतः MBh. 3, 13929. statt dessen तदा देहैर्देहवत्तो व्य-
तिरौकति नान्यथा 6, 184. — caus. vertreiben, der Herrschaft berauben: तत्राचतमरुं रोपान्यैर्भवान्व्यतिरोपितः MBh. 3, 601.

— अधि 1) ersteigen, besteigen: गिरिं न वेना अधि रोक्ते त्रेता RV. 1, 56, 2. नावम् 8, 42, 3. स्वर्णाम् AV. 3, 12, 6. चाम् 13, 3, 26. स्त्रौ रुकाणां अधि नाकमुत्तमम् VS. 11, 22. स मायमधि रोक्ते माणिः श्रेष्ठाय मूर्धतः AV. 10, 6, 31. 11, 1, 13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुक्त् R. 2, 64, 48. Çāk. 98, 14. गिरिमधिरोक्तिम् MBh. 3, 9982. R. Gorr. 1, 43, 5. 5, 34, 9. Çic. 9, 1. Vikr. 14. हेमकूटशिखरे 6, 15. क्रव्यादान् Jāgñ. 1, 272. अधिरौक्ति यं नि-
त्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3, 14506. रुयान् 7, 8917. R. 5, 73, 28. Spr. 4001. Kathās. 12, 135. 13, 28. वेदीम् MBh. 3, 11019 (S. 370, med.). 11021 (ebend., act.). तरुम् R. 3, 76, 28. चिताम् Hariv. 771 (med.). विमानम् र-
धम् MBh. 3, 4095. 14943 (med.). R. 2, 83, 2. 7, 73, 8 (med.). Kathās. 43, 364. Bhāg. P. 4, 12, 27. Mārka. P. 123, 16. Bhāṭṭ. 3, 108. पर्यङ्कम् MBh. 3, 1188. आसनम् R. 1, 70, 9 (med.). शयनम् 2, 42, 29. besteigen (zur Begat-
tung): पुत्रो मातरं स्वसारं चाधिरोक्ति At. Br. 7, 13. treten auf: केशा-
दीन्नाधिरोक्ते Kull. zu M. 4, 78. Suçr. 1, 110, 17 (zugleich besteigen). पादा-
रुतं यडुत्वाय मूर्धानमधिरोक्ति — रेणुः sich setzen auf Spr. 1762. अधिरो-
कार्य पादाभ्यां पादुके tritt mit den Füßen in die Schuhe R. 2, 112, 21. fg. sich
in die Luft erheben, aufsteigen: रयाङ्गाह्वयना द्विजाः । अधिरौक्ति 93, 11. Bhāg. P. 3, 23, 20. अधिब्रह्म erstiegen —, bestiegen habend, sitzend auf: गिरि-
प्रज्ञाधि Rāga-Tar. 3, 217. युगात्तम्, गगनात्तरम् Çāk. 37, 2 v. l. वटवृत्ता-
धि V. in Lā. (III) 21, 11. रवाधिब्रह्म Çāk. 97, 1. Ragh. 12, 104. लघुका-
ष्ठाधि Pañkāt. 76, 18. अङ्गदं चाधिब्रह्म: R. 5, 73, 27. Vop. 26, 129. तुरगा-
धि Ragh. 7, 34. द्विजस्कन्धाधि R. 2, 43, 21 (43, 22 Gorr.). Bhāg. P. 2, 7, 16. Sarvadarçanas. 133, 11. रत्नोधि Kathās. 18, 382. अधिब्रह्म गगनारो-
हिनोऽप्युत्तमोऽपि R. 3, 37, 23. ०गोवाटा Kathās. 20, 145. अवरुक्ताधिब्रह्म: Rāga-Tar. 6, 52. Pañkāt. 128, 19. पर्वतस्याधिब्रह्म स्थलम् oben gelegen P. 5, 2, 34, Sch. — 2) erklimmen so v. a. erreichen, gelangen zu: द्यामधि-